दिनांक 26सितम्बर, 2018

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

वैश्विक स्तर पर आज भी प्रासंगिक है कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र दर्शन - प्रोफेसर शुभदा जोशी

- "कौटिल्य ने बुक कीपिंग, एकाउंट्स, ऑडिट और टैक्स पद्धति का भी वर्णन किया है"
- संशय से ही ज्ञान प्राप्त होता है- प्रोफेसर अरुण मिश्र
- चार्वाक और बौद्ध दर्शन में चेतना के विषय पर भी हुई चर्चा
- सूफी दर्शन और वेदान्त दर्शन की समानताओं पर भी की गई कार्यशाला

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुम्बई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अन्त र्राष्ट्रीगय परिप्रेक्ष्यो में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग(पंजी लेखन) , एकाउंट्स(लेखा) और ऑडिट(सम्परिक्षण) का जिक्र किया गया है।

डॉक्टर जोशी का कहना था कि कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शा सक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं),तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे।

उनका कहना था कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय , अधिकारियों की कार्यपध्दति, टैक्स सिस्टम, को बेहद स्पष्टता के साथ उल्लेखित किया है। डॉक्टर शुभदा जोशी का कहना था कि उस दौर का अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के सी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना(आत्मा) की अवधारणा पर चर्चा की।

चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्तिथियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है और हमें जो भी अनुभव होते हैं वो आत्मा ही के अनुभव होते हैं। चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुण है और बौद्ध दर्शन ने इसका खंडन किया है। बौद्ध दर्शन का कहना है कि चेतना शरीर के बाहर से आती है।

विशाखापट्नम के अंदर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉर्ज विक्टर ने कहा कि भारतीय दर्शन में theology और दर्शन को अलग करना चाहिए तभी भारतीय दर्शन आगे बढ़ेगा और देश के दर्शन विषय के छात्रों को लाभ पहुंचेगा।

अंतिम सत्र में सूफी दर्शन और वेदान्त दर्शन के बीच भी चर्चा की गई। शांतिनिकेतन के प्रोफेसर सिराजुल इस्लाम ने कहा कि वेदान्त दर्शन के द्वैतवाद और अद्वैतवाद की सूफी दर्शन से समानता है।

इसी कड़ी में 27 सितम्बदर को रवीन्द्रफनाथ टैगौर के भारतीय दर्शन पर चर्चा की जायेगी एवं आधुनिक भारतीय विचार पर भी गहन चिन्ह होगा। भोपाल के डॉ रहमान अली भारत में मन्दिरों के आर्किटेक्चपर के विकास पर अपनी शोध प्रस्तुित करेंगे।